डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. वी. कॉलेज,
बारा चकिया।

B. A. PART-1
M.I.L
B.A Part-1 Subsidiary

Date:- 04-02-2023

Page No.
Date

कविता 'ताज' की व्याख्या

हाय! मृत्यु का ऐसा अमर, अपार्थिक पूजन?
जब विषण्ण, निर्जीव पड़ा हो जग का जीवन!
संग-सौध में हो शृंगार मरण का शोभन,
नग्न, क्षुधातुर, वास-विहीन रहें जीवित जन?

मानव! ऐसी भी विरक्ति क्या जीवन के प्रति?
आत्मा का अपमान, प्रेम औ' छाया से रति!
प्रेम-अर्चना यही, करें हम मरण का वरण?
स्थापित कर कंकाल, भरें जीवन का प्रांगण?
शव को दें हम रूप, रंग, आदर मानव का
मानव को हम कुत्सित चित्र बना दें शव का?

गत-युग के बहु धर्म-रूढ़ि के ताज मनोहर
मानव के मोहांध हृदय में किए हुए घर!
भूल गए हम जीवन का संदेश अनश्व,
मृतकों के हैं मृतक, जीवतों का है ईश्वर!

संदर्भ-प्रसंग :-
छायावादी कवि सुमित्रानन्दन पंत हिन्दी-साहित्य जगत में 'प्रकृति के सुकुमार' नाम से प्रसिद्ध हैं। 'ताज' शीर्षक कविता में कवितर पंतजी मानवतावादी चेतना की स्थापना की है। साथ वे प्रगतिवाद से प्रभावित होकर आम जनता की उपेक्षा करने वालों पर गहरी चोट की है एवं आमलोगों के प्रति सहानुभूति प्रकट

की है। कवि 'ताज' को पूंजीवाद, सामंतवाद एवं साम्राज्यवाद का प्रतीक मानता है। देश के लाखों करोड़ो भूखे मानवों को उपेक्षित करके मृतात्मा के लिए 'ताज' का निर्माण शोषण का प्रतीक है।

व्याख्या :-
कविवर सुमित्रानन्दन पंत अचम्भित हैं कि जब देश-दुनिया में लाखों-करोड़ों लोग भूख-प्यास से पीड़ित हैं तब किसी (मुमताज) के मौत के उपरान्त उसकी स्मृति हेतु 'ताज' का निर्माण करना व्यर्थ है। 'ताज' भले ही अद्वितीय है किन्तु आम जनता को इससे कोई लाभ नहीं है। भारतवासी आज भी अर्द्ध क्षुधित, शोषित, मूढ़, असभ्य और अशिक्षित हैं। उनके लिए 'ताज' की चमक कोई मायने नहीं रखता। मरणोपरान्त किसी के कब्र पर महल खड़े कर दिया जाय और कोई रोटी, कपड़ा और मकान के लिए तड़से। मानव का मानव के प्रति विरक्ति देखकर कवि इसका कारण जानना चाहता है।
'ताज' कविता में कवि कहता है कि 'ताज' मानवीय आत्मा का अपमान है। यह प्रेत और छाया से होने वाला प्रेम का प्रतीक है। अस्थि-पंजरों (शव) के लिए प्रेम प्रदर्शन मानव विरोधी विचारधारा है।

कवि कहता है कि शव को हम रूप, रंग और आदर-सम्मान करे और मानव को शव के कुत्सित साँचे में ढलने के लिए विवश कर दें; ये उचित नहीं है। यह ताज मृत आदर्शों का प्रतीक है, जो युग-युग से मानव जाति को मोहांध किये हुए हैं। इन परम्परागत रूढ़ियों एवं रीतियों की जड़ता का नाश होना चाहिए। मानव जाति का कल्याण हेतु इन परम्परागत रूढ़ियों को तोड़ना आवश्यक है। कविवर पंत जी इस कविता के माध्यम से यह संदेश देना चाहते हैं कि मानव को नवीन विचारधारा (मानवतावादी) के अनुसार नया समाज का निर्माण करना चाहिए।

विशेष:-

* यह कविता 'ताज' मानवतावादी और प्रगतिवादी संवेदना से ओतप्रोत है।
* इसकी भाषा खड़ी बोली हिन्दी है। शब्द सरल, सहज और सुबोध हैं।
* यह कविता मानवीय धर्म के आधार पर नव निर्माण की प्रेरणा देती है।
* 'अमर अपार्थिक', 'रूप, रंग', 'आत्मा का अपमान' आदि में अनुप्रास अलंकार का सुंदर प्रयोग किया गया है।